date, when the opening takes place, tariffs in those areas, in those markets, which we are intending to target, really come down

WTO regime for Import of services

*283 SHRI KALRAJ MISHRA Will the Minister of COMMERCE AND INDUSTRY be pleased to state

(a) whether the US, UK and other developed countries have curtailed or propose to curtail WTO regime for import of services,

(b) if so, the details thereof and the reasons therefor, and

(c) how far international trade in services is likely to be affected thereby?

THE MINISTER OF COMMERCE AND INDUSTRY (SHRI ARUN JAITELY) (a) to (c) A Statement is laid on the Table of the House

Statement

(a) No, Sir, there is no proposal by any country to curtail the World Trade Organisation [WTO] regime for import of services Negotiations for further liberalisation of trade in services through the request and offer process are presently underway, in accordance with Article XIX of the General Agreement on Trade in Services [GATS] and the Doha mandate

(b) and (c) Do not arise

श्री कालराज मिश्र: उपसभापति महोदया, माननीय मंत्री जी ने अपने उत्तर में कहा है कि, "Negotiations for further liberalisation of trade in services through the request and offer process are presently underway". मैं इसमें जानना चाहूंगा कि यह रिक्वेस्ट और ऑफर प्रोसेस किन-किन सैक्टर्स और किन-किन सदस्य देशों में किया गया है? क्या इसमें यूनाइटेड स्टेट्स, यूरोपियन यूनियन के देश तथा अन्य विकसित देश भी शामिल हैं?

श्री अरुण जेटली: उपसभापति जी, जहां तक सर्विसेज का प्रश्न है तो मल्टी लेटरल नेगोसिएशन्स में चार प्रकार की सर्विसेज पर नेगोसिएशन होता है। इन्हें चार मोड कहते हैं। मोड वन, मोड टू, मोड थ्री एण्ड मोड फोर। जहां तक मोड वन की बात है, इसमें इलेक्ट्रोनिक ट्रांसमिशन के माध्यम से सर्विसेज मिलती हैं। आजकल इसका जिक्र होता है। बी॰पी॰ ओज॰ इसके अंदर शामिल हैं। मोड फोर में मूवमेंट ऑफ नेचुरल पर्सन्स शामिल हैं। जिसमें एक देश से दूसरे देश के लोग सीमा के पार

जाते हैं और वहां जाकर अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं, जैसे हमारे यहा से इजीनियर्स, डॉक्टर्स और अन्य प्रोफेशनल्स जाते हैं। ये दो क्षेत्र ऐसे हैं जिसमें भारत का काफी इंट्रेस्ट है कि इन दो क्षेत्रों को आगे बढ़ाने के लिए इन क्षेत्रों में सर्विसेज ओपन आउट करें।

जब उरुग्वे राउंड हुआ था तो कुछ क्षेत्रों में हमने मोड 1 में विशेष रूप से ओपनिंग आउट की थी और मोड 2 में भी ओपनिंग आउट हुई थी। हम उसको मोड 1 और मोड 4 में थोड़ा और बढ़ाना चाह रहे हैं। हमने इसके लिए ऑफर्स दे दिए हैं, वे रजिस्टर भी हो गए हैं और वे इंटरनेट के ऊपर भी डाल दिए गए हैं। जहां तक मोड्स 2 और 3 है, उसमें मोड 2 में यह होता है कि वे सीमा के पार जाते हैं और इन सर्विसेस को कंज्यूम करते हैं जैसे टूरिज्म है, शिक्षा है और हेल्थ केअर है। कुछ देशों का इनके अंदर बड़ा इंटरेस्ट है और मोड 3 जोकि अभी तक कुछ क्षेत्रों में खुला है जिसमें एफ॰डी॰आई॰ के माध्यम से या कॉमर्सियल प्रजेंस के माध्यम से अपना कार्यालय बनेगा, आप वहां सर्विसेस एक दूसरे को देते हैं। तो कुछ देशों ने हमें ऑफर्स दिए हैं जोकि इन अलग-अलग मोड्स के तहत हैं। हमने इन्हें अपनी रिक्वैस्ट दी हैं और ये सब रजिस्टर हो गयी हैं। इसका उद्देश्य यह रहता है कि हालांकि कुछ इंडीवीजुअल राष्ट्र सेवा देते हैं, लेकिन जब आप उस सेवा को खोलते हैं तो फिर आपको पूर्ण रूप से जितने डब्ल्यू॰टी॰ओ॰ के सदस्य हैं, उनके लिए खोलना पड़ता है। मैडम, इसकी Negotiations रजिस्टर होने के बाद आरंभ हो गयी है।

श्री कलराज मिश्र: मैडम, इश्यू ऑफ रिस्ट्रिक्टिंग आउट सोर्सिंग ऑफ गवर्नमेंट कॉंट्रेक्ट्स टू आउट साइड ऑफ यू॰एस॰ए॰ के संबंध में क्या यू॰एस॰ ट्रेड रिप्रजेंटेटिव रॉबर्ट जैलिक से मिलकर भारत की कंसर्न को प्रस्तुत किया गया है या ये प्रश्न उठाए गए हैं जिनसे आउट सोर्सिंग का रिस्ट्रिक्शन हो सके?

श्री अरुण जेटली: माननीय उपसभापति जी, जहां तक आउट सोर्सिंग का क्षेत्र है इसमें बहुत बड़े पैमाने पर डवलप्ड कंट्रीज अपनी सेवाओं और बैंक ऑफिस ऑपरेशंस को भारत के अंदर आउट सोर्सिंग कर रहे हैं। इसके पीछे उद्देश्य बड़ा सरल है कि भारत में इस सेवाओं को आउट सोर्सिंग करने की वजह से उनको आर्थिक लाभ मिलता है क्योंकि भारत में ये सेवाएं सस्ती दर पर और अच्छी क्वालिटी की उनके लिए उपलबध रहती हैं। महोदया, जब जून के महीने में और उसके बाद मेरी यूनाइटेड स्टेट्स के रिप्रजेंटेटिव रॉबर्ट जैलिक से बातचीत हुई तो इस विषय को हमने वहां उठाया था। चूंकि वहां पर कुछ राज्यों की सरकार जैसे न्यू जर्सी ने इसको आरंभ किया था, उसके बाद कई राज्यों की सरकारें इसे प्रतिबंधित करना चाहती थीं। वे चाहती थी कि आउट सोर्सिंग में तरह-तरह के रोड ब्लॉक्स क्रिएट किए जाएं। तो जून के महीने में मैंने जैलिक साहब से मिलकर यह बात उठायी थी और उनसे स्पष्ट रूप से कहा था कि जहां तक यूनाइटेड स्टेट्स की केन्द्रीय सरकार है, वह इस प्रकार के रिस्ट्रिक्शन को पूर्ण रूप से डिसअप्रूव करती है और उस के खिलाफ है। इसके

अतिरिक्त यूनाइटेड स्टेट्स की जो इंडस्ट्री है वह भी इस बात को बहुत जोर से उठा रही है क्योंकि उनका हित इसी में है कि उनको ये सेवाएं सस्ते दर पर उपलब्ध हों न कि महंगे दर पर। अगर ये सेवाएं, अमेरिका के भीतर की सेवाएं महंगे दर पर उपलब्ध होती हैं तो शायद इस का उनकी अपनी प्रोफिटेबिलिटी पर असर पड़ता है। इसलिए वे भी इस विषय को लेकर बड़े पैमाने पर भारत के पक्ष में कैम्पेन कर रही हैं कि इस आउट सोर्सिंग को अलाउ किया जाना चाहिए। कई प्रांतों में यह मूव आया है और विशेष रूप से उन प्रांतों के कुछ राजनीतिक एक्टिविस्ट्स इस इश्यू को रेज करते हैं, लेकिन अभी तक कहीं पर यह रिस्ट्रिक्शन लागू नहीं हो पायी है।

THE DEPUTY CHAIRMAN Mr Virumbi

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE Madam, it is his 'Birthday Question'

THE DEPUTY CHAIRMAN Many happy returns of the day, Mr Virumbi

श्री प्रेम गुप्ता: मैडम, आज विरुम्भी जी का हैपी बर्थ डे है।

THE DEPUTY CHAIRMAN The whole House extends warm greetings and good wishes on his birthday

SHRI S VIDUTHALAI VIRUMBI I thank you and all the hon. Members for the greetings

Madam, now, I come to my supplementary The reply given by the hon. Minister is very simple. The hon Minister has given some explanation But the problem is, it is not as simple as he explained in his reply First, Government of a State, in the USA has, actually, passed an order to ban outsourcing A Committee was constituted in the USA to look into the issue whether outsourcing is affecting the employment opportunities for the American youth It is relating to China Recently, about a fortnight back, it has been found that there is no such a thing In spite of this revelation, there is a fear among the educated youth in the Europe and in the USA that the present jobless situation would be further aggravated by outsourcing. It is not correct The USA and other countries are benefiting from outsourcing in their economic field Now, it became a matter of subject discussion, if you go through the media dealing with financial matters in India Madam, almost every week there is an article on outsourcing In the light of this, I would like to know from the hon

Minister whether our Embassies abroad have taken any action to allay the fears of the foreign countries If 'so', the details thereof? If 'not', what action they propose to take in future

SHRI ARUN JAITLEY Madam, let me just elaborate the basis on which the hon Minister has put his question One of the basic principles of economy on which international trade, after opening up, function is that different economies are going to buy goods or services from wherever they can procure of the best quality and at the best prices That is one of the essence of the entire globalisation process Even when India's apprehensions have been raised with regard to some effects on our economy of this whole process—these are the concerns which we domestically have also raised—now, in area where we have acquired a core competence, such as IT and outsourcing operations, and we are in a position to offer cost-effective services of a very high quality Then, it is obvious that the economic balance will turn in our favour where people start acquiring those services from us There is a concern in some of the European countries, particularly, Britain There is also a concern in the USA that as far as manufacturing sector is concerned, there are jobs which are being lost to China As far as services sector is concerned, there are jobs which are being lost to India These are the concerns which have arisen in those societies Now, these concerns have been expressed by, either some Provincial Governments or some Members introducing legislations to create different kinds of roadblocks and create hurdles in the matter of outsourcing The Government of India has taken up these issues Our Missions have taken up these issues I have been in touch with our Missions abroad Our trade representatives have been very, very active We have taken up this issue at the highest level We have also gone to the extent of telling them I have personally informed Mr Zealling that it cannot be that in every other area, where the developed world is to benefit, you speak in terms of market access I mean, an area where a developing country is to benefit, you start indulging in market denial This is not how bilateral relations can proceed Therefore, this issue has been taken up Everybody is alert to this whole issue

And, as I informed the hon Members earlier, the USA Federal Government itself has taken a stand that it completely disapproves of the kind of steps that some of the Governments in their States have been taking up We have also informed them that if they disapprove it, they have to go to full length in order to make sure, within their own federal structure, that these things do not happen because we have had issues, as an illustration I have also said, when India makes an International Commitments, it is the Governmment of India that makes But, every State Government, even if it is in disagreement with something that the Government of India has done, have to comply with it because it is a national commitment and that is what their regional Governments must also really consider

Pesticide contents in Food

*284 SHRI PREM CHAND GUPTA †

SHRI P PRABHAKAR REDDY

Will the Minister of HEALTH AND FAMILY WELFARE be pleased to state

(a) whether it is a fact that the danger of consuming pesticides and chemicals with food is high in the country, largely due to inept administrative control and lack of will of the authorities to implement the laws on food safety,

(b) whether the recent controversy of pesticide residues in soft drinks, insect infestations in chocolates are just some examples of the danger that exists, and

(c) if so, the action taken by Government thereon?

THE MINISTER OF HEALTH AND FAMILY WELFARE (SHRIMATI SUSHMA SWARAJ) (a) to (c) A Statement is laid on the Table of the House

---

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Prem Chand Gupta